शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

युग निर्माता: लोकमान्य तिलक

डॉ. सुनीता कुमारी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
राँची विश्वविद्यालय
राँची, झारखण्ड, भारत

शोध संक्षेप

आज की तेजी से भागती दुनिया और प्रतिस्पर्द्धा का ये दौर - इस कठिन और प्रतिस्पर्द्धात्मक दैनिक जीवन में हम सभी को अपनी समृद्ध विरासत और अतीत को याद करने के लिए मुश्किल से ही समय मिलता है। सम्पूर्ण राष्ट्र आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। ऐसे में कुछ ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों को याद कर उन्हें शतशत नमन कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करना हमारा परम कर्तव्य है। महान स्वतन्त्रता सेनानियों में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का नाम बहुत आदर से लिया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर विचार किया गया है।

भूमिका

लोकमान्य तिलक एक महान् योद्धा थे। शिक्षा प्रसारक, समाज-सुधारक, धर्म उद्धारक एवं महान् राजनीतिज्ञ के रूप में हम उन्हें जानते हैं। लोकमान्य तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को वर्तमान महाराष्ट्र स्थित रत्नागिरी जिले के एक गाँव चिखली में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गंगाधर तिलक एवं माता का नाम पार्वती बाई गंगाधर था। बचपन में लोकमान्य तिलक बहुत कमजोर थे। अपने शरीर को मजबूत करने के लिए उन्होंने कठोर व्यायाम किया। ब्रिटिश दासता से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने अनवरत संघर्ष किया। भारत की सनातन परंपरा और संस्कृति के प्रति विशेष आदर के चलते उन्होंने अपने आन्दोलन की रूपरेखा इसके आसपास रची। जिसने पूरे भारत में आजादी के प्रति ललक पैदा की। हजारों लोगों के लिए लोकमान्य तिलक के वाक्य वेद वाक्य के समान थे। जब 1 अगस्त 1920 को लोकमान्य तिलक की मृत्यु हुई तब महात्मा गांधी ने कहा'नरों में सिंह इस दुनिया से चला गया' लोकमान्य तिलक ने 20 वर्षों तक सतत 'स्वराज्य' की माला का जाप किया, जिसने भारत की आजादी की पूर्वपीठिका तैयार की।

लोकमान्य तिलक का कृतित्व

भारत में तिलक जी से पहले भी आजादी के लिए अनेक आन्दोलन हुए किन्तु तिलक जी ने स्वराज के लिए एक ऐसा प्रचण्ड शक्तिशाली आन्दोलन चलाया, जिसमें विदेशी सत्ता या स्वदेशी जनमानस ही नहीं अपितु राजनीति की व्याख्या, मान्यता, धारणा और कल्पना प्रबल वेग से आन्दोलित हो उठी और उस महामंथन से राष्ट्र की चेतना अमृतपान कर 'हतो वा प्राप्यसे स्वर्गम जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्' के गीता रहस्य को आत्मसात् करती हुई स्वराज्य के लिए खड़ी हो गई। लोकमान्य तिलक का यह प्रसिद्ध कथन "स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा' एक नारा बन गया और लोगों के कंठ का हार बन आज भी प्रेरणा देता है। इसने स्वराज के प्रति भारतीयों में विवेक पैदा

किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान को देखते हुए लोकमान्य तिलक को भारतीय जनमानस के नेता के रूप में सम्मान प्राप्त है।

ब्रिटिश औपनिवेशिक पदाधिकारी उन्हें 'भारतीय अशान्ति के पिता' कहते थे। उन्हें 'लोकमान्य' का आदरणीय उपनाम भी प्राप्त हुआ, जिसका अर्थ है लोगों द्वारा स्वीकृत (उनके नायक के रूप में)।[1]

लोकमान्य तिलक अंग्रेजी शिक्षा के घोर आलोचक थे और मानते थे कि यह भारतीय सभ्यता के प्रति अनादर सिखाती है। उन्होंने दक्षिण शिक्षा सोसायटी की स्थापना की ताकि भारत में शिक्षा का स्तर सुधरे।"[2]

भारत की विशाल जनसंख्या को देखते हुए तिलक का मत था कि शिक्षा ऐसी हो जिसमें स्वरोजगार तथा आत्मनिर्भरता पर बल दिया जाए। यही कारण है कि राष्ट्र के विकास के लिए तिलक जी ने जो विचार मराठी पत्रों में दिए उन्होंने इन्हें एक शिक्षक से राजनेता बना दिया। सन 1907 में कांग्रेस गरम दल और नरम दल में विभाजित हो गयी। उस समय लाला लाजपत राय, बिपिन चंद्रपाल और बाल गंगाधर तिलक तीनों गरम दल में थे, जिनके कारण उन्हें लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने प्लेग की बीमारी के दौरान देशवासियों की बहुत सेवा की और 'हिन्दू प्लेग अस्पताल' के नाम से एक अस्पताल भी शुरू किया।

तिलक ने प्लेग के सम्बन्ध में सरकार की जो भर्त्सना की थी, जिन कुटिल कार्य-नीतियों का पर्दाफाश किया था, उससे सरकार तिलमिला उठी। 'केसरी' और 'मरहट्ठा' में प्रकाशित उनके वक्तयों की तीव्र प्रतिक्रिया हुई।

एंग्लो-इण्डियन प्रेस और नौकरशाही तिलक पर अभियोग चलाने की मांग करने लगे। मगर तिलक ने निर्भय होकर सत्य को उजागर किया। महारानी विक्टोरिया की जयन्ती पर तिलक ने 'केसरी' में तीन लेखक प्रकाशित किए। इसमें दो लेख ब्रिटिश साम्राज्ञी के शासनकाल में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार सम्बन्धी थे और एक लेख भारत की तत्कालीन स्थिति को दर्शाता था। उन्होंने लिखा "हमारे काव्यशास्त्र का यह नियम है कि यदि रावण का वर्णन विशद रूप से किया गया है तो राम का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं रह जाती। इतना कहने से स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि राम की शक्ति इतनी थी कि रावण भी परास्त हो गया। यह नियम यहाँ भी लागू होता है। हमने लिखा है कि इंग्लैण्ड का व्यापार और शक्ति इतनी विस्तृत है और फिर कहा है कि भारत इंग्लैंड का एक गरीब अधीन राज्य है इससे चतुर पाठकों के सामने उसका नक्शा अपने आप आ जाता है।"[3]

तिलक ने भीषण जेल यातनाएँ भोगीं। शारीरिक रूप से वे बिल्कुल निचुड़ गये किन्तु बौद्धिक पक्ष कभी पराजित नहीं हुआ। ऐसी ही विषम जेल यातना के दौरान उन्होंने 'गीता रहस्य' जैसे महान ग्रन्थ का सृजन किया। इसके लिए उन्हें आध्यात्मिक समाज 'तिलक महाराज' कहता है।

"नागरी प्रचारिणी सभा के वार्षिक सम्मेलन में भाषण देते हुए उन्होंने पूरे भारत के लिए समान लिपि के रूप में देवनागरी लिपि की वकालत की और कहा कि समान लिपि की समस्या ऐतिहासिक आधार पर नहीं सुलझायी जा सकती। उन्होंने तर्कपूर्ण ढंग से दलील दी कि रोमन लिपि भारतीय भाषाओं के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है।"[4]

सन 1905 में नागरी प्रचारिणी सभा में उन्होंने कहा था - "देवनागरी को समस्त भारतीय भाषाओं के लिए स्वीकार किया जाना चाहिए।"[5]

निष्कर्ष

तिलक जैसे महानायक की मृत्यु 01 अगस्त 1920 को हुई। निःस्संदेह हम कह सकते हैं कि जिस लीडर ने लोगों को, जनता के दिलों को पकड़ा, उनको एक नया बल प्रदान किया, वह थे लोकमान्य तिलक। ये एक महान् व्यक्ति थे जिनका स्मरण करना भी हम सबको एक नया जीवन, नया बल प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1 Dr. Tahmankar (1956) Lokamany Tilak Father of Indian Unrest and maker of Modern India Johan Murray, 1st Edition 1956 9 जुलाई 2013 को पुरालेखित-अभिगमन तिथि 5 फरवरी 2013

2 RajAvinash - "Bal Gangadhar Tilak Birth Anniversary स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, हम इसे लेकर रहेंगे, जानें महान नेता के लोकमान्य बनने की कहानी।

3 शंकर सुंल्तानपुरी लोकमान्य तिलक- साहित्य केन्द्र प्रकाशन, दिल्ली, 1989, पृष्ठ 43

4 Literature in English, ch-07 Pdf A Standard Character for Indian Languages (मृत कड़ियाँ)

5 हिन्दी भाषा की परम्परा, प्रयोग और संभावनाएं पृष्ठ 92